नव भारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी
प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

पाक की बौखलाहट

जी 20 देशों के वर्किंग ग्रुप की तीन दिवसीय बैठक हाल ही में कश्मीर में संपन्न हुई. इस बैठक में करीब 17 देशों के 60 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया. बैठक में पर्यावरण, आंतरिक सुरक्षा, गरीबी, पारस्परिक व्यापार जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई. विश्व के सबसे एलिट देशों के इस समूह की इस वर्ष अध्यक्षता भारत कर रहा है. इसी कारण इस समूह की तमाम बैठकों की मेजबानी भारत को मिली है. भारत ने एक अच्छा कूटनीतिक फैसला लेते हुए जी-20 समूह की बैठक श्रीनगर में आयोजित की इससे अंतरराष्ट्रीय मीडिया और देशों के प्रतिनिधियों को कश्मीर के वास्तविक हालात देखने का मौका मिला. भारत के इस कूटनीतिक दांव से पाकिस्तान बौखला गया. पाकिस्तान के विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो जरदारी ने इस बैठक के दौरान जानबूझकर पाक अधिकृत कश्मीर का दौरा किया तथा कश्मीर को लेकर फिर से अपना पुराना राग अलापा. कश्मीर को लेकर वही सब बातें बिलावल ने दोहराई जिन्हें पाकिस्तान विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पिछले लगभग 75 वर्षों से उठा रहा है. पाकिस्तान की बौखलाहट का विश्व के अधिकांश देशों पर असर नहीं हुआ क्योंकि सभी ने कश्मीर के मुद्दे पर भारत के रवैया का समर्थन किया है. जी-20 देशों की बैठक में भी पाकिस्तान का साथ केवल चीन, सऊदी अरब और तुर्की ने दिया. अन्यथा चौपन मुस्लिम देशों सहित दुनिया के अधिकांश देशों ने कश्मीर पर भारत के अधिकार और उसके स्टैंड का बार-बार समर्थन किया है. दरअसल पाकिस्तान की बौखलाहट कश्मीर से धारा 370 हटाने के बाद से और बढ़ गई है. भारत ने अपने संवैधानिक अधिकारों का उपयोग करते हुए 5 अगस्त 2019 में कश्मीर से धारा 370 हटा दी थी. उस समय भी पाकिस्तान ने खूब शोर मचाया था लेकिन संयुक्त राष्ट्र संघ और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों ने भारत का खुलकर समर्थन किया. इससे पाकिस्तान की बौखलाहट बढ़ती गई.

भारत को लेकर पाकिस्तान की एक दिक्कत यह भी है कि वहां इन दिनों गृह युद्ध के हालात हैं. ऐसे में पाकिस्तानी जनता का ध्यान भटकाने के लिए वह जानबूझकर कश्मीर का मुद्दा उठाकर भारत को बदनाम करने की कोशिश करता है. कश्मीर से धारा 370 हटाने से आतंकवादी घटनाओं में कमी आई है. कट्टरपंथी आतंकी संगठनों को कश्मीर में घुसपैठ के मौके मिलने मुश्किल हो गए हैं. इस कारण से भी पाकिस्तान की बौखलाहट दिनों दिन बढ़ती जा रही है. सोशल मीडिया और इंटरनेट के कारण पाक अधिकृत कश्मीर के लोगों को भारत के कश्मीर की बढ़ती खुशहाली के बारे में जानकारी लगातार मिल रही है. पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के हालात जहां दिन-ब-दिन बद से बदतर होते जा रहे हैं, वही भारतीय कश्मीर के विकास को नए पंख लग गए हैं. पर्यटन उद्योग नई ऊंचाइयां छू रहा है. पिछले वर्ष कश्मीर में एक करोड 80 लाख पर्यटक आए थे. इस बार यह संख्या दो करोड़ पार जाने की संभावना है. पर्यटन के अलावा भी कश्मीर में पूंजी निवेश और उद्योगों की संख्या बढ़ रही है. पाक अधिकृत कश्मीर के लोग जब भारत के कश्मीर की खुशहाली देखते हैं तो उनमें पाकिस्तानी सेना और शासकों के प्रति आक्रोश का भाव उमड़ता है. यह आक्रोश दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है और बगावत का रूप ले रहा है. इस वजह से पाकिस्तान को आंतरिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है. पाकिस्तान के बौखलाहट की एक वजह यह भी है.

बहरहाल, भारत ने समय-समय पर पाकिस्तान के किसी भी कूटनीतिक प्रहार का आक्रमक और प्रभावी ढंग से जवाब दिया है. जी-20 देशों के सम्मेलन के मामले में भी भारतीय विदेश मंत्री डॉ सुब्रमण्यम जयशंकर ने पाकिस्तान और चीन की आपत्तियों को खारिज करते हुए कहा कि भारत एक संप्रभु देश है और उसे अपने किसी भी हिस्से में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने का पूरा अधिकार है. जाहिर है पाकिस्तान के अनर्गल प्रलाप का असर ना तो भारत पर पड़ रहा है और ना ही दुनिया इससे प्रभावित हो रही है.

अमेरिका दिवालिया हो गया

...तो बाकी दुनिया का क्या होगा?

इस समय पूरी दुनिया में सबसे बड़ा चर्चा का विषय यही है कि क्या अमेरिका अपने कर्ज संकट के चलते दिवालिया हो जाएगा? खुद को दुनिया की एकमात्र महाशक्ति मानने वाला अमेरिका अपने कर्ज संकट के चलते अगर वाकई दिवालिया हो गया तो बाकी दुनिया का क्या होगा? अमेरिका के लिए यह संकट कितना बड़ा है, इसे इसी बात से समझा जा सकता है कि राष्ट्रपति जो बाइडन जी-7 देशों की हिरोशिमा बैठक में हिस्सा लेकर सीधे वापस वाशिंगटन आ गए, जबकि उन्हें क्वाड में हिस्सा लेने के लिए ऑस्ट्रेलिया भी जाना था. लेकिन देश के कर्ज संकट को देखते हुए वह वापस अमेरिका आ गए हैं, क्योंकि हर हालत में इस संकट को आगामी 10 जून 2023 तक सुलझाना ही होगा, नहीं तो अमेरिका वायदे के मुताबिक अपने कर्ज का भुगतान समय पर नहीं कर पाएगा. अमेरिका अपनी कर्ज देनदारी को समय पर नहीं चुका पाएगा तो पूरी दुनिया की वित्तीय साख चरमरा जाएगी. इसकी वजह यह है कि दुनिया के

सवाल है कि अगर अमेरिका अपने कर्ज की कुछ किस्तें चुका नहीं पाएगा या चुकाने में थोड़ा लेट हो जाएगा तो दुनिया को इससे वित्तीय नुकसान क्यों होगा? अमेरिका की इस निजी चिंता में दुनिया क्यों चिंतित हो?

ज्यादातर बड़े बैंक अमेरिका के केंद्रीय बैंक से बॉन्ड खरीदते हैं और उन्हीं बॉन्ड की बदौलत अपनी अर्थव्यवस्था की मजबूती का आंकलन करते हैं. एक बार अगर अमेरिका ही कर्ज की किस्त देने से चूक जाता है तो अमेरिका का कुल सालाना बजट लगभग 6500 लाख करोड़ डॉलर का होता है. लेकिन अमेरिकी सरकारें आमतौर पर अपनी इस सालाना बजट से कहीं ज्यादा खर्च कर देती हैं और फिर अपने इस बढ़े हुए खर्च की पूर्ति के लिए संसद की मंजूरी ले लेती हैं और अपने खर्च की सीमा को बढ़ा देती हैं. हर साल उन्हें ऐसा ही करना पड़ता है. जब अमेरिका की संसद में भी उसी पार्टी का बहुमत होता है, जिसकी सरकार होती है, तब तो कोई दिक्कत नहीं होती, लेकिन जब सरकार किसी दूसरी पार्टी की होती है और संसद में बहुमत किसी दूसरी पार्टी का होता है, तब यह संकट खड़ा होता है. हर बार अमेरिकी सरकार को अपने बढ़े हुए खर्चों को पूरा करने के लिए संसद के भरोसे रहना होता है और संसद की मदद से ही वह अपने खर्च की लिमिट बढ़ा सकता है. प्रतिनिधि सभा में बहुमत न होने के कारण अमेरिकी सरकार संकट में फंस गई है. बाइडन संसद के स्पीकर कैविन मैकार्थी से लगातार बातचीत कर रहे हैं कि हर सूरत में उन्हें डेट सीलिंग की मंजूरी दी जाए. आसान भाषा में, कर्ज के लिए बिल पास करा दिया जाए. अगर ऐसा नहीं हुआ तो अमेरिकी सरकार अपनी कई देनदारियों से चूक जाएगी और डिफॉल्टर साबित होगी.

– नरेंद्र शर्मा

अमेरिकी शेयर बाजार ध्वस्त होने का खतरा

अगर अमेरिका के साथ वाकई ऐसा हुआ तो पूरी दुनिया में आर्थिक संकट छा सकता है. अमेरिकी शेयर बाजार ध्वस्त हो सकता है और इनवेस्टर्स के दिल-दिमाग में डर बैठ सकता है, जिससे कैश फ्लो का संकट खड़ा हो सकता है. संसद में चूंकि रिपब्लिकन पार्टी का दबदबा है और अगर हाउस स्पीकर कैविन मैकार्थी सहयोग नहीं करते तो बड़ी समस्या खड़ी हो सकती है. चूंकि रिपब्लिकन पार्टी के कैविन मैकार्थी पर पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का प्रभाव है और ट्रंप नहीं चाहते कि मैकार्थी, बाइडन को सहयोग करें. अमेरिका पर फिलहाल 2,489 लाख करोड़ डॉलर का कर्ज है, जो 2001 के मुकाबले लगभग 5 गुना है. पिछले 20 वर्षों में अमेरिकी सरकारों के मनमाने खर्च में 500 फीसदी तक की वृद्धि हुई है. अमेरिका में ऐसा पिछले 50-60 वर्षों से लगातार हो रहा है, लेकिन सरकारें अंतिम समय में इस संकट का हल निकाल लेती हैं. अमेरिका पर जो देसी-विदेशी कर्ज चढ़ा हुआ है, वह अमेरिका के कुल जीडीपी का सवा गुना हो चुका है, यानी अमेरिका के जीडीपी से 125 पर्सेंट से ज्यादा उस पर कर्ज है. इस कर्ज से मनोवैज्ञानिक दहशत फैलती है, जो पूरी दुनिया को संकट में डालने के लिए काफी है.

निशानेबाज

राहुल की ट्रक चालक से मुलाकात, सफर में सुनी उसके मन की बात

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, कांग्रेस नेता राहुल गांधी को न जाने क्या सूझी कि वह प्रधानमंत्री मोदी के मन की बात सुनने की बजाय एक ट्रक चालक के मन की बात सुनने लगे. उन्होंने तड़के सुबह 5.30 बजे अंबाला सिटी के मंजी साहब गुरुद्वारे पर एक ट्रक को रुकवाया, फिर गुरुद्वारे में माथा टेककर ट्रक ड्राइवर के बगल में जा बैठे और अंबाला से चंडीगढ़ तक 50 किलोमीटर का सफर ट्रक में तय किया. वे ट्रक ड्राइवर से उसके पेशे की समस्या और मन की बात सुनते रहे.

हमने कहा, किसी को अपने मन की बात सुनाने और उसके मन में झांककर उसके मन में उठते विचारों, कल्पनाओं, आकांक्षाओं और अंतर्द्वंद्व को समझने में बड़ा अंतर होता है. यह काम मनोवैज्ञानिक भलीभांति कर सकते हैं. राहुल गांधी ने ट्रक ड्राइवर का मन टटोलकर देखा. कांग्रेस के अनुसार भारत की सड़कों पर करीब 90 लाख ट्रक ड्राइवर हैं. राहुल ने एक तरह से उसकी मानसिकता का सैम्पल सर्वे किया. ट्रक चालक ने बताया होगा कि उसे बड़ी कुशलता से बैलेंस करते हुए ओवरलोड ट्रक चलाना पड़ता है और टाइम पर माल की डिलीवरी देनी पड़ती है. लोडिंग-अनलोडिंग के लिए ट्रक रुकता है. भूख लगने पर किसी ढाबे पर ट्रक रोककर खाट पर बैठकर खाना खा लेने और फिर वहीं लेटकर सुस्ताने के बाद आगे बढ़ जाना, यही उसकी जिंदगी है. रास्ते में ट्रक रोकनेवाले पुलिसवालों को 'गांधी दर्शन' कराना पड़ता है. परिवार से लंबे समय तक दूर रहना ट्रक चालक की मजबूरी है, इसलिए उसे अस्थायी रूप से जगह-जगह पारिवारिक माहौल बनाना पड़ता है. लंबे सफर में या तो वह खुद मौज में आकर गाता है या तेज आवाज में म्यूजिक सुनता है, राहुल ने उसे बताया होगा कि अपनी भारत जोड़ो यात्रा के दौरान वो भी कंटेनर में रहे थे. ट्रक ड्राइवर भी सारे देश की सड़कों पर वाहन चलाकर भारत जोड़ने का काम कर रहे हैं.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, जहां तक मन की बात है, वह बड़ा चंचल होता है. उसकी गति रॉकेट से भी तेज होती है. कहते हैं रामायण काल का पुष्पक विमान मन की शक्ति से उड़ता था. सारी इंद्रियों के स्वामी मन को महत्व देते हुए फिल्मी गीत लिखे गए हैं जैसे कि- नाचो नाचो प्यारे मन के मोर! मन मोरा नाचे तगिन धिग दा धीगी धीगी! दुखी मन मेरे, सुन मेरा कहना, जहां नहीं चैना वहां नहीं रहना! राही मतवाले, छेड़ जरा मन का सितार, जाने कब चोरी-चोरी आएगी बहार! लूटे कोई मन का नगर बनके मेरा साथी, कौन है वो ! मेरे मन ये बता दे तू, किस ओर चला है तू, क्या पाया नहीं तूने, क्या ढूंढ रहा है तू!

हमने कहा, सबसे बड़ी बात है कि मन के हारे हार है, मन के जीते जीत!

अनुभा मुंजारे के सहारे कांग्रेस ने खेला बड़ा दांव...?

बालाघाट में लम्बे अर्से से सक्रिय नेत्री अनुभा मुंजारे ने कांग्रेस का दामन थाम लिया है. उनके पाला बदलते ही बालाघाट विधानसभा सीट सहित समीपी अन्य सीटों के राजनीतिक समीकरणों का बदलना भी लगभग सुनिश्चित हो गया है. इसका नजारा उनके कांग्रेसीकरण के बाद प्रथम बालाघाट आगमन के दौरान सामने आया. उनके स्वागत सत्कार में उनके पुराने समर्थकों के साथ कांग्रेस कार्यकर्त्ता उमड़े, उससे यह माना जाने लगा है कि आगामी विधानसभा चुनाव में भाजपा की अजेय बालाघाट विधानसभा सीट पर इस बार कड़ा मुकाबला होने वाला है. उल्लेखनीय है कि तीन बार नगर पंचायत अध्यक्ष तथा दस वर्ष नगर पालिका अध्यक्ष रह चुकी अनुभा मुंजारे क्रांतिकारी नेता की पहचान रखने वाले कंकर मुंजारे की पत्नी हैं. कंकर मुंजारे वर्षों से समाजवादी पार्टी की विचारधारा को आगे बढ़ाने का काम करते रहे हैं, वह निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर सांसद का चुनाव जीत चुके हैं. अनुभा मुंजारे भी लोकसभा-विधानसभा चुनाव लड़ चुकी हैं. भले ही उन्हें इन चुनावों में सफलता नहीं मिली है, लेकिन हर चुनाव में अपनी सशक्त मौजूदगी दर्ज कराते हुये उन्होंने दूसरे राजनीतिक दलों के सियासी समीकरणों को प्रभावित जरूर किया है.

स्मरण रहे कि मुंजारे परिवार लोधी समाज से हैं. कभी यहां से लोधी समाज के विधायक निर्वाचित हुआ करते थे, किंतु मौजूदा राजनीतिक परिदृश्य में लोधी समाज जिले की किसी भी विधानसभा सीट में प्रतिनिधित्व विहीन है. लिहाजा अनुभा मंजारे को लेकर कांग्रेस ने जो कार्ड खेला है, उससे माना जा रहा है कि जिले की राजनीति में बाहुल्यता के बावजूद हाशिए पर डाल दिये लोधी समाज को ना केवल नेतृत्व मिल सकेगा बल्कि इस समाज के माध्यम से दूसरी अन्य विधानसभा सीटों के समीकरणों को भी साधने में कांग्रेस को मदद मिल सकेगी. हालांकि अनुभा मुंजारे को पार्टी में शामिल किये जाने से सभी कांग्रेसी खुश हैं, ऐसा भी नहीं है. दबे-दबे स्वर में विरोध भी हुआ, किन्तु शीर्ष नेतृत्व से इसे ज्यादा तवज्जों नहीं मिली.

भाजपा में खलबली....

बालाघाट विधानसभा सीट भाजपा की सीट मानी जाती है. अनेक वर्षों से पूर्व सांसद और प्रदेश के पूर्व मंत्री तथा मौजूदा म.प्र. पिछड़ा वर्ग आयोग अध्यक्ष गौरीशंकर बिसेन इस सीट से जीत दर्ज करते आए हैं. इस बार उन्होंने बालाघाट सीट से चुनाव न लड़ने का ऐलान महीनों पहले ही कर दिया है, परन्तु वह अपनी बेटी मौसम हरिनखेड़े को टिकट देने की अपेक्षा पार्टी से कर रहे हैं. प्रदेश भाजपा संगठन उनकी इस

महाकौशल की डायरी
अविनाश दीक्षित

अपेक्षा को कितना महत्व देती है, यह भविष्य में पता चलेगा, लेकिन यदि बिसेन की मंशानुरूप मौसम हरिनखेड़े भाजपा से उम्मीदवार बनाई जाती है और कांग्रेस भी अनुभा मुंजारे को इसी सीट से प्रत्याशी घोषित करती है तो मुकाबला खासा रोचक होगा ही बल्कि अनुभा के सहारे कांग्रेस इस सीट को अजेय भाजपाई सीट होने के मिथक को तोड़ने में भी सफल हो सकती है. इस बात को लेकर जिले में कयासों का बाजार सरगर्म है और कहा जा रहा है कि कांग्रेस के इस सियासी दांव से भाजपाई हल्कों में खलबली मच गई है. चुनाव में अभी महीनों का समय बाकी है और राजनीति में कब-कौन ताकतवर बनकर उभर आए इस पर कुछ कहा नहीं जा सकता, किन्तु इतना तय है कि बालाघाट सीट का चुनावी युद्ध भाजपा के लिए कठिन साबित हो सकता है. फिलहाल पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष हिना कांवरे और बालाघाट प्रभारी आलोक मिश्रा के प्रयासों को शीर्ष कांग्रेस नेताओं से सराहना मिल रही है, जिससे दोनों नेताओं के साथ स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्त्ता उत्साहित नजर आ रहे हैं.

दिग्गी की घोषणा से बदले समीकरण.....

86 सप्ताह से चल रहे सिहोरा जिला आंदोलन को लेकर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह की एक घोषणा से सिहोरा-कुंडम विधानसभा क्षेत्र के राजनीतिक समीकरण बदलते नजर आने लगे हैं. विगत दिनों दिग्विजय सिंह ने कांग्रेस के सत्ता में आने पर सिहोरा को जिला बनाने का वादा पत्रकारों के सवालों के दौरान किया. इसके बाद से आंदोलन समिति के पदाधिकारी जहां उत्साहित नजर आने लगे हैं, वहीं सियासी समीकरण कांग्रेस की ओर जाते दिख रहे हैं. इस मुद्दे पर भाजपा पहले ही इंकार कर चुकी है, यद्यपि क्षेत्रीय भाजपा विधायक नंदिनी मरावी स्पष्ट रूप से कुछ भी कहने से बचती रहीं, उन्होंने इतना जरूर कहा था कि इस विषय में उन्हें मझौली-बहोरीबंद विधायकों का साथ नहीं मिल रहा. यद्यपि सिहोरा के दूसरे अन्य भाजपा नेता जो अपनी सियासी जमीन मजबूत करने के प्रयास में लगे हैं, वह सिहोरा को जिला बनाने के मुद्दे पर परोक्ष समर्थन दे रहे हैं, परंतु मौजूदा भाजपा विधायक के रवैय्ये से आंदोलनकारी सहित व्यापारी और आम नागरिक भी असंतुष्ट हैं. इस मौके का फायदा कांग्रेस उठाना चाह रही है, लिहाजा दिग्विजय सिंह सिहोरा को जिला बनाने की घोषणा कर गये. जिससे स्थानीय कांग्रेस नेताओं को मुद्दे को भुनाने के लिए और भी ताकत मिल गई है.

1 के बदले लो 500 के चार

गुलाबी नोटों का बेड़ा पार

लोगों को और खासतौर पर महिलाओं को गुलाबी रंग से बड़ा प्रेम होता है. जब जवानी चढ़ती है तो 'पिंक ऑफ यूथ' कहलाती है. 2000 रुपए वाले गुलाबी नोट से इतनी मोहब्बत हो गई थी कि लोग उसे खर्च करना ही नहीं चाहते थे और सीने से चिपकाए हुए थे. 6 वर्षों से यही हाल था. सरकार ने लोगों के इमोशनल लगाव की परवाह नहीं की और फरमान सुना दिया कि 30 सितंबर तक इस नोट को बदलवा लो. उसे अपने से जुदा कर दो. सच पूछा जाए तो इस बार की नोटबंदी बड़ी फीकी फीकी लग रही है. 2016 में उसने सनसनी फैलाई थी. आम जनता बैंकों के सामने बड़ी-बड़ी कतारों में घंटों खड़े रहने को मजबूर थी. राहुल गांधी ने कुर्ते की फटी जेब दिखाते हुए तस्वीर खिंचवाई थी. कतारों में खड़े कुछ लोग थक-हार कर वहीं शहीद हो गए थे. नोटबंदी के सदमे से लघु-मध्यम उद्योग बंद और लोग बेरोजगार हो गए थे. विपक्ष ने उसे सरकार का तुगलकी फैसला कहा था. इस बार गुलाबी नोट की वापसी में सस्पेंस जैसी कोई चीज ही नहीं है. कोई पूछनेवाला नहीं है कि यार इतने गुलाबी नोट लाया कहां से? किस बाबा ने तेरी इतनी झोली भर दी? इन नोटों को भुनाने के बाद क्या है तेरा इरादा? कोई कसम है या वादा! बोरा भर नोट हो तो भी घर के मेंबर्स और नौकर-चाकरों के जरिए आसानी से सारे नोट बदल डालो. एक बार में 20 हजार! दोगे 10 गुलाबी नोट और पाओगे 500 वाले 40 नोट! डिजिटल जमाने में पेपर करेंसी का लेन- देन भूलना मत. आयकर वालों से डरने की जरूरत नहीं. लांड्री में कपड़े धुलते हैं कि नहीं? आओ काला धन भी सफेद कर लो. न कोई फार्म भरना है, न आईडी दिखाना है. यह स्वर्णिम अवसर है सोना खरीदने का. गुलाबी के बदले गोल्ड! आभूषण लो या गिन्नी. पिछली नोटबंदी ने बहुत सताया लेकिन इस बार आसान रास्ता बताया. गुलाबी नोट भूल जाओ, पान के साथ गुलकंद खाओ न मेहनत, न मशक्कत, देखो सरकार का करतब! एक गुलाबी के बदले 500 के चार, नहीं कोई तकरार!

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

पत्र email करें: nbp_bhopal@rediffmail.com

शब्द-सागर: डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11198 - डॉ. सागर खादीवाला

1. खोज, चाह (उर्दू), 2. बौना, ठिकनापन, 3. बूढ़ा, दादा, साधु-संन्यासी, जरी के तार खींचने वाला (उर्दू), 5. काशी, वाराणसी, 7. गुलाम, खरीदा हुआ नौकर, 9. बयान करना, कहना, जताना, 10. अंग्रेजी वर्ष का पांचवा महीना, 13. फैक्ट्री, अधिक मात्रा में वस्तुएं तैयार करने का स्थान, 14. पूंछ, 15. ईश्वर, 16. चीजें खरीदकर बेचने का काम, 17. किसी भी तरह की सवारी, विमान (सं.), 18. उस समय, इस कारण, 21. नगीना, संख्या, अदद, 22. जिस समय, जिस वक्त.

बाएं से दाएं
1. तलवार चलाने वाला व्यक्ति (उर्दू), 6. बोरा, थैला, टूटा फूटा सामान, 8. ओस, तुषार (उर्दू), 11. कमी, न्यूनता (उर्दू), 12. स्थिर दृष्टि से ध्यानपूर्वक देखना, 13. एक आंख का, एकाक्ष, 16. कसरत, बल चढ़ाने के लिए किया जाने वाला शारीरिक परिश्रम, 18. बीता हुआ, दशा, अवस्था, 20. खाना और पीना, खाने पीने का ढंग, 22. उत्तर, मुकाबले की चीज, नौकरी से हटाने की आज्ञा, 23. नगर संबंधी, नगर निवासियों से संबंध रखने वाला, 24. पराया धन अनुचित रूप से हजम करना (उर्दू)

ऊपर से नीचे

Solution 11197

क	न	स्त	र	■	र	स	द
दा	म	■	ज	ल	वि	हा	र
हा	स्य	■	नी	ड़	■	य	■
र	■	आ	ज	■	ब	क	ना
■	पा	ग	ल	प	न	■	■
ग	र	म	■	क	वा	य	द
म	■	न	र	ना	री	■	र्प
न	वशा	■	व	■	■	प्रा	ण

ज्योतिषाचार्य पं. नारायणशंकर नाथूराम व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारम्भ में विचार विमर्श होगा. व्यक्तित्व का विकास होगा. संबंधों में मधुरता आयेगी. वर्ष के मध्य में शारीरिक कष्ट और मानसिक चिन्ता रहेगी. स्वजनों से मतभेद होगा. पारिवारिक परेशानी में वृद्धि होगी. आर्थिक लाभ होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को आर्थिक स्थिति में सुधार होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को नई योजनाओं में सहयोग रहेगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को बुद्धि विकास होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट और मानसिक परेशानी से चिन्ता होगी. मकर और कुम्भ राशि के व्यक्तियों को विशेष सफलता मिलेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान, चतुर, व्यवहार कुशल, परिश्रमी, स्पष्टवादी तथा निड़र होगा. निर्णय लेने की अच्छी शक्ति रहेगी, अपने उद्देश्यों की पूर्ति के प्रति सचेत रहेगा. सभी के साथ अच्छा व्यवहार करेगा.

मेष- संबंधों में आपका मन भावनात्मक आपूर्ति पर केंद्रित होगा, धार्मिक व पारंपरिक कार्यों में मन लगेगा, रोजगार के क्षेत्र में अपनी क्षमता का पूर्ण लाभ उठायें.

वृषभ- मन प्रसन्न व उत्साहित रहेगा, प्रियजनों का सानिध्य प्राप्त होगा, प्रणय संबंध मधुर रहेंगे, शासन व राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी.

मिथुन- निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें, आकस्मिक तनाव हो सकता है, निराशावादी विचारों को छोड़कर आशावादी बनें, कष्टों को भूलकर वर्तमान को बेहतर बनायें.

कर्क- नयी आकांक्षाएं मन को उद्वेलित करेंगी, पुराने संबंधों में प्रगाढता बढेगी, बुजुर्गों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें. पुरानी बातों को भुलाने की चेष्टा करें.

सिंह- किसी नयी योजना की ओर बढेंगे, महत्वाकांक्षा ऊँची प्रगति की ओर ले जायेगी, जरूरी कार्य सार्थक होने का योग है, कार्य में सहयोग मिलेगा.

कन्या- स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें, अनुकूल नैतिक कर्तव्यों का पालन करें, निकट संबंधों में पारदर्शिता रखें, छोटी छोटी बातों को भूलना हितकर रहेगा.

तुला- अपने भविष्य को सुनियोजित करें, भविष्य संबंधी कुछ चिंताएं रह सकती हैं, परिवार को एक सूत्र में बनाये रखने हेतु प्रयास करेंगें.

वृश्चिक- कार्यों में अवरोध से मन अवसादग्रस्त होगा. मधुरवाणी से संबंधमें प्रगाढता बढेगी, जीविका के क्षेत्र में लाभ होगा, दायित्वों का निर्वहन होगा.

धनु- किसी नये कार्य की पूर्ति होगी, भवुकता व्यवहारिक जगत के अनुकूल चलने की चेष्टा करें. परिवार के विरोध का सामना करना पड़ सकता है.

मकर- मन धनागम की नयी युक्तियों की आर केंद्रित होगा, कार्य क्षेत्र में किसी सहकर्मी से मतभेद संभव है, जीवनसाथी का भावनात्मक स्नेह प्राप्त होगा.

कुम्भ- मन पर नियंत्रण रख अपने कर्तव्यों के प्रति केंद्रित हों, किसी नये संबंध के प्रति ध्यान देना होगा, थोड़ा संयमी और धैर्यवान बनें.

मीन- कुछ नयी सामाजिक व्यस्तताएं सामने आयेंगी, महत्वपूर्ण दायित्वों की पूर्ति होगी, किसी अचल संपत्ति के क्रय हेतु प्रयास प्रारंभ होंगे.

उदयकालीन ग्रह चाल

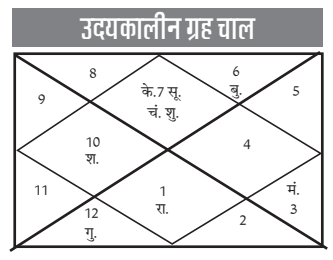

पंचांग

रा.मि. 05 संवत् 2080 ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमीं भृगुवासरे दिन-रात, आश्लेषा नक्षत्रे रात 7/17, ध्रुव योगे शाम 6/1, गर करणे सू.उ. 5/18, सू.अ. 6/42, चन्द्रचार कर्क रात 7/17 से सिंह, शु.रा. 4, 6, 7, 10, 11, 2 अ.रा. 5, 8, 9, 12, 1, 3 शुभांक- 6, 8, 2.

व्यापार भविष्य

ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमीं को आश्लेषा नक्षत्र के प्रभाव से गुड, खांड, चीनी के भाव में मंदी होगी, जीरा, धनिया, सौंप, अजवाईन के भाव में मामूली नरमीं का रूख रहेगा, वायदा विचार आज 2 बजकर 9 मिनिट से 15 मिनिट के रूख पर व्यापार करना लाभकारी रहेगा. भाग्यांक 4220 है

SUDOKU 6330

8		4	3	9	7	5		6
3					2			
		7	6	5				4
9	6		5			1		7
5		1	4		9	8		2
4		8					5	3
2				6	1	4		
			7					8
7		9	8	3	5	6		1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 6329

7	8	4	9	5	2	6	1	3
9	6	2	4	3	1	8	5	7
1	3	5	7	8	6	2	4	9
4	2	3	6	1	5	9	7	8
8	5	9	2	4	7	1	3	6
6	7	1	3	9	8	4	2	5
3	1	7	8	6	4	5	9	2
5	9	6	1	2	3	7	8	4
2	4	8	5	7	9	3	6	1